ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय ®

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 1 अंक : 5 जून - जुलाई 2011 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

निर्जला एकादशी	डा. महेश पारासर	1
आपके प्रश्नों के समाधान	डा. महेश पारासर	2
आपकी वास्तु समस्या का समाधान	पं. अजय दत्ता	3
स्वास्तिक रहस्य	डा. रचना भारद्वाज	4
रत्न निर्धारण में रहें सावधान	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	5
संवत 2068 में पड़ने वाले ग्रहणो का विवरण	डा. कविता के अगरवाल	6
ग्रह तय करतें हैं शिक्षा और कैरियर	मोनिका गुप्ता	7
फेंगशुई के उपाय–जीवन खुशहाल बनाए	श्रीमती रेखा जैन	8
संतान और कालसर्प योग'	पं. दयानन्द शास्त्री	9
जन्म कुण्डली आईना है आपके जीवन का	पं. अजय दत्ता	10
पूजन में प्रयुक्त वस्तुओं का महत्व	पवन कुमार मेहरोत्रा	10
घर में पूजा स्थल कहाँ और क्यों?	श्रीमती रेनू कपूर	11
गो–मूत्रकी तुलनामें कोई महौषधि नहीं	डॉ. सतीश शर्मा	12
सूर्यनमस्कार ॐ प्रणामासन	योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता	12
श्री राम चरित मानस के सातों काण्ड के नामकरण में छिपा है आध्यात्मिक रहस्य ?	सुरेश अग्रवाल	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
झूठी प्रशंसा	विजय शर्मा	16
पूजा की सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा ए. डी. ऑफसैट, 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर 6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

निर्जला एकादशी

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की एकादशी 'निर्जला एकादशी' के नाम से प्रसिद्ध है। यह विशुद्ध धार्मिक पर्व प्रायः सम्पूर्ण भारत में बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है शास्त्रकारों ने सशक्तों के लिए इस व्रत को निर्जल रहकर मनाने का विधान किया हैं। यू तो हिन्दू घरों में प्रायः प्रत्येक मास की एकादशी को उपवास रखने का नियम पुरातन काल से चला आता है परन्तु जो लोग वर्ष भर की अन्य एकादशी तिथियों में व्रती नहीं रह सकते थे केवल इस एकादशी का व्रत करके शास्त्रदृष्टि से तत्फल–भागी हो सकता है, यथा–

वृषस्थे मिथुनस्थेऽर्के शुक्ले ह्येकादशी भवेत्। ज्येष्ठे मासि प्रयत्नेन सोपोष्या जलवर्जिता।।
संवत्सरस्य या मध्ये एकादश्यों भवन्त्युतः। तासां फलमवाप्नोति अत्र मे नास्ति संशयः।।

पुराणों में वर्णन किया गया है कि भगवान् व्यास से इस एकादशी के महत्व का श्रवण कर वृकोदर भीम ने भी इस एकादशी की निर्जल उपवास करने का कष्टपूर्ण साहस किया था। तब से इसका अवान्तर नाम 'भीमसेनी एकादशी' भी पड़ गया।

निर्जल उपवास इस व्रत की प्रमुख विशेषता है। जब कि गरमी अपनी चरम सीमा पर होती है, हाथ से पानी का गिलास छोड़े नहीं छूटता, लोग तरह–तरह के शीतल पेय पीकर अपनी प्यास को शान्त करने का प्रयन्त किया करते हैं ऐसे समय में बिना जल पिये दिन भर उपवास करना तप और सहिष्णुता को पराकाष्ठा है। भारतीय संस्कृति की तपोवन की संस्कृति है, उसका उद्भव तप से ही हुआ है, अतः उसके घरेलू जीवन में भी इस प्रकार की तपोमय साधना का सन्निवेश होना अनिवार्य ही हैं। ये भूख–प्यास, सदा गर्मी, हर्ष क्षोभ, मान–अपमान रुपी द्वन्द्व ही तो वे विघ्न हैं जो मनुष्य के भगवत्प्राप्ति के मार्ग में रुकावट डालते हैं। एक दिन भोजन न मिले तो मनुष्य तड़फड़ा उड़ता है। भगवान और उनका भजन सभी कुछ विरस मालूम पड़ने लगता है। परन्तु हिन्दू जीवन–पद्धति से जीवन यापन करने वाले व्यक्ति के लिये इस प्रकार की दशाएं कुछ नवीन नहीं रहती। ज्येष्ठ मास के ऐसे प्रचण्ड तप्त दिन में जिस व्यक्ति ने निर्जल उपवास कर लिया उसके लिए जीवन में क्षुधा , तृषा को भी सहकर अपने लक्ष्य की ओर सग्रेसर रहना कुछ कठिन नही रहता।

महेश पारासर

पाठकों के पत्र

आदरणी सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

मैं पिछले 5 वर्षों से आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने आप में उत्तम कोटि का होता है। लेख ज्ञानवर्धक औंर रोचक होते हैं। आशा है कि पत्रिका आने वाले दिनों में और अधिक सफलता प्राप्त करेगी।

श्री सत्यभान जैन– हाथरस

आदरणीय डॉ. पारासर जी,

भविष्य निर्णय द्विमासिक पत्रिका का अप्रैल–मई 2011 का अंक प्राप्त किया। आप दीपावली पर क्या नया लेकर आ रहे हैं। कृपया यत्रों को प्रकाशित करने की कृपा करें।

मनोहर लाल शास्त्री –मुरैना।

अमृत वचन

अज्ञानी पैदा होना अभिशाप नहीं है

परन्तु अज्ञानी रह कर मरना

ही जीवन का अभिशाप है।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि–मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि–मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– मेरी कुण्डली के हिसाब से मेरा प्रमोशन कब तक होने की सम्भावना है। बताने की कृपा करें।

राजेश शर्मा –मथुरा।

उत्तर– आपकी कुण्डली के अनुसार निकट भविष्य में आपके प्रमोशन की सम्भावना नहीं है। उपाय हेतु आप मूँगा व मोती रत्न धारण करें और सूर्य की उपासना करें।

प्रश्न– कुछ कारणों से मेरा पुत्र इस वर्ष परीक्षा में फेल हो गया है। अगले वर्ष अच्छे नम्बरों से पास हो कुछ तरीका बतायें। अनिल नागरथ–शमसाबाद

उत्तर– बच्चे के गले में सरस्वती यंत्र धारण करवायें। एक पन्ना सोने में सीधे हाथ की कनिष्ठा में धारण करवायें तथा रोजाना गणेश उपासना करवायें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या:- मुझें ऐसा लगता है कि हम जबसे इस कोठी में रह रहे हैं तब से हमारी परेशानियाँ बढ़ गई हैं। सभी लोग तनावग्रस्त रहते हैं। पति का व्यापार में, बच्चों का स्टडी में मन नहीं लगता और मेरा भी स्वास्थ्य दिन पर दिन खराब होता जा रहा हैं। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ते ही जा रहे हैं। कृपया उचित मार्गदर्शन करें। आपकी अति कृपा होगी। माधुरी सारस्वत- नईदिल्ली

समाधान- वास्तुशास्त्र के अनुसार आपकी कोठी का दक्षिण पश्चिम कोण हल्का सा कटा हुआ है। जो कि ठीक नहीं हैं, आप उसको ठीक करवायें। कोठी में जो उत्तर पूर्व की ओर रूम है उसमे आपने कूड़ा-करकट भरा हुआ है उसे साफ करवा कर वहाँ छोटे से मंदिर की स्थापना करें। बच्चों का रूम दक्षिण पूर्व से हटा कर उत्तर पश्चिम की ओर करें और अपना मास्टर बेडरूम बच्चों के रूम वाली जगह ले जायें। कुछ दिनों मे ही अन्तर दिखाई देना शुरू हो जायेगा।

समास्या- मैनें अपना मकान नक्शे के मुताबिक बनवाया था, पिछले तीन सालों से आर्थिक उन्नति अवरूद्ध हो गई हैं। विवाह पीछा नहीं छोड़े रहें। कारण व उपाय बतायें।

रमेश ओझा- मैनपुरी

समाधान- आपके घर में आपकी रसोई गलत दिशा में है उसे यदि सम्भव हो तो दक्षिण पूर्व की और स्थानांतरित करें। यदि चाहें तो एक 8 रत्ती का लाजवर्त नग धारण करे। तुरन्त लाभ मिलेगा। घर में नवग्रह शान्ती का पाठ करवायें। आराम मिलेगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

स्वास्तिक रहस्य

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

स्वास्तिक हमारा प्राचीन प्रतीक है। स्वास्तिक खगोल और भूगोल के संतुलन की कुंजी है। यह मंगलदायक यंत्र है। शुभ फलदायक ताबीज है। वैसे तो विभिन्न रंगों से रेखाओं और आंकारों के अंकन द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति मानव अनादि प्रवृत्ति रही है। यही प्रवृत्ति चित्रकला के उद्‌भव मूल में है।

इसी कारण प्रत्येक संस्कृति में अपने–अपने ढंग के रुपाकारों, मॉडनों, संकेतों, ताबीजों, यंत्रों आदि का इतिहास मिलता है। इसी प्रकार स्वास्तिक रहस्यमय सांस्कृतिक प्रतीक है। जो आज भारतीय संस्कृति का मांगलिक प्रतीक और पहचान बना हुआ है। मानव के पुस्तकालय की प्रचीनतम पुस्तक ऋग्वेद से लेकर आज तक इस प्रतीक को किसी न किसी प्रकार के संकेत शोध विद्वानों द्वारा खोजते रहे है।

विभिन्न देशों में स्वास्तिक के पाये जाने के बारे में टॉमस विल्सन ने एक पुस्तक में लिखा है 'स्वास्तिक द अर्लिएस्ट नोन सिंबल एंड इट्स माइगोरान स्वास्तिक भी अध्ययन का रुचिकर विषय है। अतः वेद मंत्रों में इसे ब्रह्माण्ड का प्रतीक अथवा खगोल यंत्र का निहित रुप बताया है। यह स्वास्तिक पृथ्वी के लिए मंगलकारी माना गया है। स्वास्तिक अथवा मंगल, कल्याण, शकुन, शुभ सब इसके द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। तभी से यह मन्दिरों, गृहों पूजास्थलों आदि में अकिंत किया जाता है। वैदिक, पौराणिक सभी कर्मकाण्डों में इसे मान्यता मिली हुयी है। यही इसका वैज्ञानिक रहस्य है।

❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property

Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja

Horoscope, Match Making & Varshphal

Mon to Thu12 PM to 6 PM

भविष्य दर्शन®

Dr. Rachna K Bhardwaj

Consultant of Astrology & Vastu

East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

रत्न निर्धारण में रहें सावधान

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

जन्मपत्री किसी भी व्यक्ति के चरित्र आचरण व्यवहार एवं दशा का आईना होती है। जातक द्वारा बताई गयी समस्याओं का जन्मपत्रिका के अध्ययन द्वारा विभिन्न उपायों द्वारा समाधान किया जाता है। समाधानों में विभिन्न माध्यमों जैसे यंत्र, पूजा–पाठ, जाप, अनुष्ठान, माला, व्रत का प्रयोग किया जाता है। इन में महत्वपूर्ण उपाय रत्नों का धारण कराना भी होता है। प्रत्येक ग्रह के लिए अलग–2 रत्नों का विधान है। रत्नों द्वारा उपचार बहुत ही प्रभावशाली होता है। एवं इनका ग्रहों के शुभ फल प्रात करने में विशेष महत्व होता है।

सही रत्न व्यक्ति को शुभ फल प्रदान करता है परन्तु यदि रत्न गलत हो गया तो जातक को अशुभ फल प्राप्त होने लगते है। इसलिए किसी भी जातक को रत्नों की सलाह देने से पहले जन्मपत्री का ध्यानपूर्वक विवेचन अवश्य करलें।

अनेक ज्योतिषि जातक को बिना कुछ अधिक सोच–विचार के लग्न का रत्न पहना देते है जो कि सर्वथा अनुचित है। इसका कारण यह कि यदि जातक का लग्न नीच का है तो लग्न का रत्न शुभ फल देने की अपेक्षा अशुभ फल देने लगेगा। रत्न निर्धारण करते समय कुछ मुख्य बिन्दूओं को अवश्य ध्यान में रखें।

–ग्रह नीच का है अथवा उच्च का

–ग्रह जाग्रत है या सुता है।

–ग्रह की अवस्था क्या है जिसका अर्थ है कि ग्रह बाल, युवा, या वृद्ध है।

–जातक की महादशा एवं अर्न्तदशा।

–जातक किस समस्या के लिए आया है।

–ग्रहों की दृष्टि।

–जातक की कुण्डली में ग्रह किस भाव में विद्यमान है।

–पुरानी पद्यति के अनुसार अनेक ज्योतिषी लग्न पंचम एवं नवम भाव के रत्न पहना देते है परन्तु आज के परिवेश में यह व्यवहारिक नहीं है हमें जातक की समस्या विशेष का ध्यान रखकर ही रत्न का निर्धारण करना चाहिए।

–रत्नों की रत्ती (वजन) का निर्धारण ग्रहों की अवस्था एवं बल पर निर्भर करता है।

–रत्नों का बहुत मँहगा होना ही आवश्यक नहीं है। ग्रहों की स्थिति के अनुसार संस्ता रत्न एवं उपरत्न भी शुभ फल दे सकते है।

–रत्नों का उचित शुद्धिकरण एवं अभिमन्त्रण भी आवश्यक होता है।

–रत्नों को हमेशा ग्रह से संबंधित मन्त्रों का जाप करके ही धारण करना चाहिए।

–रत्नों को शुभ मूहूर्त एवं उसके लिए निर्धारण वार को ही धारण करना चाहिए।

–जहां तक संभव हो पड़वा, चौथ, चौदस एवं नौवी के दिन रत्न धारण न करें।

–चटका हुआ एवं टूटा हुआ रत्न कभी भी धारण न करें।

–जहां तक संभव रत्न ज्योतिषी के मार्ग दर्शन में ही धारण करें।

–रत्न निर्धारण का सबसे उचित तरीका जन्मपत्रिका के विवेचन द्वारा ही है।

–बिना सोचे–विचारे या गलत रत्न पहनने से अच्छा है कि व्यक्ति रत्न न पहनें।

–रत्न किस धातु में धारण किया जाय इसकी भी उचित सलाह अवश्य लें।

–रत्न किस ऊंगली में पहना जाऐगा यह भी सही निर्धारण होना चाहिए।

यदि हम उपरोक्त बातों का विशेष ध्यान रखकर रत्नों का चयन करे तो अवश्य ही सफलता आपके कदम चूमेगी।

❋ ❋ ❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

संवत 2068 में पड़ने वाले ग्रहणो का विवरण

डा. (श्रीमती) कविता के अगरवाल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

क्या है ग्रहण - राहू व केतु को ग्रहण लगने का कारण जाना जाता है। जब भी सूर्य को राहु–केतु द्वारा ढकने पर जब सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर नही पहुँचता तब उसे सूर्यग्रहण कहते है। सूर्य,पृथ्वी के जितने भाग पर घनी छाया रहने से दिखलायी नही देते, उतने भाग पर सूर्य का खग्रास सूर्यग्रहण होता है। और जिस भाग पर कम परछाई पड़ती है, उस पर सूर्य का खण्डग्रास ग्रहण होता है। इस प्रकार सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी–तीनो एक सीधे में नही होते। अमावस्या के दिन जब चन्द्रमा, ठीक राहु या केतु बिंदु पर हो तथा पृथ्वी–समीप बिन्दू पर हो इस स्थिति में चन्द्रमा की गहरी छाया जितने स्थानो पर पड़ती है उतने स्थान पर खग्रास ग्रहण दिखलाई देता है। जो सम्पूर्ण सूर्य बिश्व को ढकने वाला होता है। कंकणाकार या ववयाकार सूर्यग्रहण में अमावस्या के दिन चन्द्रमा ठीक राहु केतु बिंदु पर होते है। किंतु पृथ्वी से दूर बिंदु पर होते है जिसमे सूर्य बिम्ब के बीच का भाग ढकता है।

खण्डित सूर्यग्रहण अमावस्या के दिन जब चंद्रमा राहु केतु बिंदु पर न होकर उनमें से किसी एक बिंदु पर होते है, सूर्य बिम्ब के अंश को ही ढकता है, खंण्डित सूर्यग्रहण दृश्य होता है। चन्द्रग्रहण पूर्णिमा को दृश्य होता है जब सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा बिल्कुल सीध में एक सरल रेखा में होते है, पृथ्वी सूर्य–चंद्रमा के मध्य आ गयी है। पृथ्वी और चंद्रमा की छाया में होकर गुजरते है तब चंद्रग्रहण होता है। चंद्रमा का समूचा पिंड पृथ्वी की छाया में आने से खग्रास चंद्रग्रहण और आधा अधूरा पिण्ड पृथ्वी की छाया में आने से खण्ड चन्द्रग्रहण कहलाता है। कोई भी ग्रहण किसी देश में दिखाई दे या न दे इससे कोई अन्तर नही पडता क्योकि हमारी पृथ्वी एक साकार पिण्ड है और मनुष्य इस पिण्ड पर रहने वाला चैतन्य प्राणी है। ग्रहण का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर अवश्य ही पड़ेगा क्योकि ग्रहों की गोचरीय स्थिति भी इस ओर संकेत देती है। जिस प्रकार के धर परिवार में किसी भी सदस्य के ऊपर संकट आने पर पूरा परिवार प्रभावित होता है उसी प्रकार देश विदेश में किसी भी प्राकृतिक घटना का प्रभाव समस्त भूमण्डल पर पड़ता है।

ग्रहण काल में सावधानी – सूर्यग्रहण के सूतक 12 घंटे पूर्व व चन्द्रग्रहण के सूतक 9 घंटे पूर्व लग जाता है। बालक, वृद्ध एवं रोगियों को 3 घंटे पूर्व से ग्रहण के सूतक मानने की परम्परा है। आध्यात्मिक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ग्रहण को खुली आँखो से न देखें जिन राशि वाले जातको को ग्रहण का फल अशुभ हो उन्हे ग्रहण नहीं देखना चाहिए। ग्रहण काल में मूर्ति स्पर्श, शयन, भोजन निषेध होता है। गर्भवती स्त्रियों को संतान की सुरक्षा हेतु ग्रहण काल में वाहर नही आना चाहिए। ग्रहण के मध्य में हवन, जप कीर्तन एंव दान का महत्व है। ग्रहण के मोक्षकाल में एवम आरम्भ में स्नान करने का विधान है।

संवत 2068 4 अप्रैल 2011 से 22 मार्च 2012 तक समस्त भूमण्डल पर पाँच ग्रहण होगें जिनमें तीन सूर्यग्रहण जो दूसरे देशो में दिखाई देगे दो चन्द्रग्रहण होंगे जिन्हे खग्रस के रूप में पूरे भारत वर्ष में देखा जा सकता है।

पहला ग्रहण- 01 या 02 जून को खण्डग्रास सूर्यग्रहण जेष्ठ कृष्ण अमावस्या बुधवार, वृष राशि, रोहिणी नक्षत्र में अर्द्धरात्रि 00–15 मिनट से सुबह 04 बजकर 36 मिनट तक रहेगा यह उत्तरी अमेरिका, कनाडा, अवास्का, ग्रीनलैण्ड व उ. ध्रुव क्षेत्र में देखा जा सकेगा। भारत में यह दृश्य नही होगा।

इस ग्रहण का प्रभाव रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशि पर विशेष रूप से होगा। ग्रहणकाल में जातक को इष्टदेव आराधना, गुरूमंत्र का जाप व दानादि करने चाहिए।

दूसरा ग्रहण- 15 या 16 जून 2011 को खग्रास चन्द्रग्रहण ज्येष्ठ, शुक्लपक्ष पूर्णिमा बुधवार, वृश्चिक–धनु राशि के ज्येष्ठा,मूल नक्षत्र में अर्द्धरात्रि 23 बजकर 53 मि0 से 03 बजकर 33 मिनट सुबह तक रहेगा। यह ग्रहण भारत में दृश्य होगा इसके अलावा दक्षिण अमेरिका, एशिया, अफ्रीका, यूरोप में भी दृश्य होगा। इस ग्रहण के सूतक 15 जून को बुधवार 02 बजकर 53 मिनट से आरम्भ हो जायेगा।

इस ग्रहण का प्रभाव वृश्चिक/धनु राशि व ज्येष्ठा व मूल नक्षत्र में जन्मे जातको पर विशेष रूप से होगा। इसलिए पूजापाठ, जाप, दान आदि अवश्य करें।

तीसरा ग्रहण- 01 जुलाई 2011 को खण्डग्रास सूर्यग्रहण, आषाण, कृष्ण पक्ष अमावस्या शुक्रवार, मिथुन राशि आद्रा नक्षत्र में दोपहर 01 बजकर 23 मिनट से दोपहर 02 बजकर 52 मिनट तक रहेगा। ग्रहण के सूतक 30 जुलाई को मध्यरात्रि से प्रारम्भ हो जायेगे। यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं है। यह ग्रहण अफ्रीका महाद्वीप पैसिफिक व दक्षिणी हिन्दमहासागर तथा अंर्टार्टिका के क्षेत्रो पर दिखाई देगा।

इस ग्रहण का प्रभाव मिथुन राशि व आद्रा नक्षत्र में जन्में जातको पर विशेष रूप से पडेगा अतः ग्रहण के दर्शन इन जातको को नही करने चाहिए।

एक ही साथ लगातार तीन ग्रहण होते है। तब प्राकृतिक व

शेष पेज 18 **पर**.....

ग्रह तय करतें हैं शिक्षा और कैरियर

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

"व्यक्ति की शिक्षा एवं रोजगार जन्मकालीन ग्रहों के आधार पर ही निर्धारित होता है। शिशु के जन्म के साथ ही उसके स्कूल कॉलेज, प्रतियोगी परीक्षा, रोजगार आदि की योजना ज्योतिष की मदद से बनायी जा सकती है"

किसी भी व्यक्ति की जन्मपत्रिका में जन्मांग, चंद्र, नवमांश तथा विभिन्न दशायें गोचर आदि मिलकर उसके भाग्य को सूचित करतें हैं। जन्मांग को लेकर ही हम शिक्षा एवं कैरियर पर विचार करते हैं। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करते ही विषय निर्धारण समस्या बन जाती है। आज के प्रतियोगी समय में ये सबसे बड़ी समस्या बना हुआ है कि किस दिशा में जायें ? क्या करें ? क्या अच्छा रहेगा कैरियर के लिए ? किसमें सफलता मिलेगी ? जैसे सवाल आज हर जगह सुननें में मिलतें है मां–बाप चिन्तित रहते हैं। कि वो अपने बच्चों को किस दिशा में जाने की सलाह दें पर जब बच्चे का जन्म होता है, ये तो तभी निश्चित हो जाता है कि वो डॉक्टर बनेगा या इंजीनियर। नौकरी करेगा। या व्यापार। ज्यादा पढ़ेगा या कम। नेता बनेगा या अभिनेता या फिर कोई अधिकारी। तो फिर चिन्ता कैसी। जरूरत है सही सलाह की। जिससे आप सलाह लें वो अच्छा जानकार हो, विशेषज्ञ हो। जो सही गणित लगाकर आपको सही सलाह दे सके। तो आइये जानें कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में लेकर जाता है–

कुण्डली में पंचम भाव को विद्या का स्थान माना जाता है। इसके आलावा द्वितीय भाव से भी विद्या देखी जाती है। ओर नवम, दशम, एकादश भाव रोजगार, ज्ञान के कारक भाव हैं।

शिक्षा की दृष्टि से विज्ञान संकाय (Science Field) के लिए सूर्य, शुक्र, चन्द्र एवं मंगल कारक होते है। इसी संकाय में तकनीकी या गणित के लिए बुध महत्वपूर्ण है, अतः इन ग्रहों और भावों के बलवान होने पर जातक को विज्ञान (Science) दिलाना उचित हैं। बुध, शनि केतु प्रबल हों तो वाणिज्य (Commerce) दिलाना लाभदायक हैं। चन्द्र, गुरू, शुक्र, कला संकाय (Art Field) में लाभदायी हैं।

जन्मकुण्डली में दसवां भाव रोजगार का तीसरा भाव पराक्रम का माना जाता है। इन दोनों भावों के ग्रह जितने बलवान होंगें, जातक उस ग्रह के अनूरूप कैरियर अपनाता है।

जैसे–

सूर्य होने पर चिकित्सक, प्रशासनिक सेवायें, सरकारी नौकरी, एम.बी.ए, अधिकारी, बहुमूल्य धातु एवं रत्नों का काम, कृषि कर्म, अनाज का व्यापार, पैत्रिक काम, खाने की वस्तुओं का व्यापार आदि।

चन्द्र होने पर जल के नजदीक का व्यवसाय, समुद्री जहाज, नौसेना, स्त्रियों से सम्बन्धित कार्य, खेतों, दलाली, कमीशन ऐजेन्ट, पेय पदार्थो का व्यापार पीने की वस्तुयें, पानी, दूध आदि का प्लांट, सफेद वस्तुओं का कार्य आदि।

मंगल होने पर भूमि–भवन, रियल एस्टेट, उद्योग धन्धे, बिजलीघर के उत्पाद केन्द्र, इंजीनियर हार्डवेयर इलेक्ट्रोनिक्स शल्य चिकित्सा, प्रशासनिक पद, सेना, पुलिस, कमिश्नर, वास्तु, मेडीकल, दवायें, एम आर आदि।

बुध होने पर लेखक, कवि, गीतकार, कम्प्यूटर आपरेटर, मूर्तिकला, आर्किटेक्ट, इंटीरियर, लेखाकार, चित्रकार, फाइनेन्स, प्रकाशन, एम बी ए, सी ए, सी एस आदि।

गुरु होने पर अध्यापक, प्रोफेसर, प्रवचनकर्ता, साधु, सन्त, समाजसेवा के बड़े प्रतिष्ठान, मंत्री एंव समकक्ष पद, स्कूल, कॉलेज, विवि कोचिंग इंस्टीट्यूट, बेंक, ज्योतिष, आचार्य, सोना आदि।

शुक्र होने पर कला, संगीत, फिल्म, नाटक, अभिनेता, मॉडलिंग, डायरेक्टर, फेशन डिजाइनर, ब्यूटी पार्लर, कीमती धातु (सोना,

शेष पेज 18 **पर**.....

वास्तुदोष, आर्थिक, व्यापारिक, मानसिक, शारीरिक, शिक्षा, दुर्घटना, जायदाद, वैवाहिक, घरेलू समस्याओं का यंत्र/मंत्र/रत्न द्वारा समाधान हेतु मिलें

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

डॉ. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय,
वास्तुशास्त्राचार्य

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

फेंगशुई के उपाय-जीवन खुशहाल बनाए

डॉ. श्रीमती रेखा जैन "आस्था"
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

आज कल अधिकांश लोगो की जुंवा पर वास्तुशास्त्र तथा फेंगशुई आदि शब्दों का प्रयोग दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। फेंगशुई है क्या, यह बहुत कम लोग ही जानते है। फेंगशुई वास्तुशास्त्र से जुडी हुई चीनी पद्धति है। इसका प्रयोग चीन में सादियों से हो रहा है। वास्तविकता यह भी है कि हमारे देश में भी वास्तुशास्त्र का प्रयोग सदियों से हो रहा था। प्राचीन काल के सभी किलें, महल, इमारत, आदि वास्तु अनुरूप ही बनें है।

पाठको में आप को फेगंशुई के कुछ ऐसे सरल उपाय बताने जा रही हूँ। जिसे अपना कर आप जीवन खुशहाल बना सकते है।

1. मांगलिक चिन्हों का प्रयोग – मांगलिक चिन्ह यानी ऊँ, स्वास्तिक, शुभ लाभ, श्री, आदि। इन चिन्हों का प्रयोग बहुत उपयोगी माना जाता है। इसका प्रयोग हम घर के मुख्य द्वार पर अथवा घर के किसी भी कक्ष में कर सकते है। विद्यार्थी स्टिकर के रूप में इन्हें अपनी डायरी नोटबुक आदि पर भी लगा सकते है। माना जाता है। कि मांगलिक चिन्हों से नकारात्मक ऊर्जा सक्रिय नहीं होती।

2. लाफिंग बुद्धा – हँसते हुए बुद्धा की मूर्ति धन दौलत के देवताओं में से एक मानी जाती है। इससे घर में सम्पन्नता सफलता समृद्धि आती है। इसे इस प्रकार बैठक में रखे कि बाहर से आने वाले व्यक्ति को यह सामने से दिखाई दें। अथवा इसका चेहरा मुख्य द्वार की ओर हो। इसे शयन कक्ष में न रखें।

3. तीन टांगो बाला मेंढक – तीन टांगो बाला मेढ़क वहुत भाग्यशाली माना जाता है। इसके मुख में आमतौर पर एक सिक्का लगा रहता है। इसको इस प्रकार रखें कि मेंढ़क सिक्का यानि धन लेकर घर के अन्दर आ रहा है। इसका मुहँ दरवाजे की ओर रखें।

4. स्फटिक के गोले– घर का दक्षिण पश्चिम कोना प्रेम व स्नेह का माना जाता है। यह क्षेत्र पृथ्वी तत्व है। इस क्षेत्र की शक्ति बढाने के लिए वड़े स्फटिक के गोलों का प्रयोग किया जाता है। जिससे परिवार में स्नेह सम्वन्धों में वृद्धि हो। आपसी सम्बन्धों में सामजस्य स्थापित कर घर में सुख शान्ति स्थापित हो।

5. प्रेमी परिंदे (लव वर्डस)– चीनी संस्कृति में मैडरिन बतख का जोडा पति पत्नी के वीच प्रेम व रोमांस का प्रतीक होता है। लेकिन अन्य लव बर्डस भी उतने ही प्रभावशाली होते हैं। यह प्रेमी परिंदे भी आपके प्रेमपूर्ण जीवन को समृद्धि प्रदान करता है। यह ध यान रखे कि पक्षी पिंजरे में न हो और दोनो नर–मादा ही हो। दोनों नर या दोनों मादा न हो। यदि आप विवाह योग्य है तो आप अपने शयनकक्ष में लव वर्ड्स का प्रयोग जरूर करे। लव बर्ड्स का प्रयोग सदैव जोडे में ही करे। एक या तीन पक्षी या बतख न हो।

6. पवन घंटियाँ (विंड चाइम्स) – पवन घंटियाँ भाग्य वढाने का अद्भुत स्त्रोत्र है।

पवन घंटियाँ दुर्भाग्य के प्रभाव को कम करती है। छः या सात छड़ो वाली पवन घंटियों का प्रयोग लाभ दायक होता है। इसके अतिरिक्त छोटी छोटी घंटियाँ जिनकी संख्या छःया सात हो मुख्य द्वार पर भी लगा सकते है।

7. चीनी सिक्के– धन प्राप्ति के लिए या धन सम्बंधी भाग्य को सक्रीय करने के लिए यह चीनी सिक्के वहुत असरदार साबित होते है। इन तीनों सिक्कों को लाल धागें में बाँधकर अपने पर्स में रख सकते है।

8. ड्रेगन– ड्रेगन सौभाग्य का सूचक है। लकडी का बना ड्रेगन बहुत अच्छा रहता है। यह अपने कार्यालय, फैक्ट्री या दुकान शोरूम, होटल आदि पर लगा सकते है। इससे क्रियाशील बढती है

9. घोड़े का नाल– घोड़े का नाल को भाग्यशाली व शुभ माना जाता है। मान्यता हे कि घोड़े की नाल लगाने से व्यक्ति का भाग्य भी घोड़े की तरह दौड़ता है। घोड़े की नाल को अपने घर के मुख्य द्वार के ऊपर लगाते है।

10. लघु मछली घर (एक्यूरियम)– अपने घर के ईशान या पूर्व में लघु मछली घर रख सकते है। इसमें कुल 9 मछलियां होनी चाहिए जिसमें से 8 लाल रंग या सुनहरे रंग की और 1 काले रंग की। अगर इनमें से कोई मछली मर जाती है। तो उसे हटा कर बाजार से एक और मछली ला कर रख सकते है। इससे घर खुशहाली रहती है।

11. तस्वीर– परिवार के सभी सदस्यों का प्रसन्नचित्त मुद्रा में एक सयुक्त चित्र घर में ऐसे स्थान पर लगाए जहाँ परिवार के सभी सदस्य आते जाते उसे देखें। इससे जिन घरों में भाई–भाई या सास वहुएं के बीच झगड़े होते है। उसे खत्म करने में बहुत प्रभावशाली है। पति पत्नी अपने शयन कक्ष में पति पत्नी का ही मुस्कुराता हुआ चित्र लगाये जिससे उनके सम्बंधो में और प्रगाढ़ता आयें। यह थे फेंगशुई के कुछ उपाय जो आप आसानी से अपना कर अपने जीवन को सुख समद्ध बना सकते है।

❋ ❋ ❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 250/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 500/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतपय स्टेट बैंक खाते में 10039621098, आगरा शाखा में जमा

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

संतान और कालसर्प योग

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

संतानहीनता दाम्पत्य जीवन का दुःखद पहलू हैं। ज्योतिश शास्त्र में संतान सुख के लिए जातक की जन्म कुण्डली में पंचम भाव, पंचमेश एवं गुरू की स्थिति का आंकलन कर विचार किया जाता हैं।

संतान सुख से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पहलू कालसर्प योग जो कि संतान सुख से वंचित रखने में अपनी भूमिका अदा करता हैं। कालसर्प योग का प्रभाव शनि जैसे कूर ग्रह के प्रभाव से भी कहीं अधिक कष्टदायी और पीड़ा दायक होता हैं यह योग जातक को अभाव ग्रस्त बना देता हैं।

सर्प को काल कहा गया हैं काल का अर्थ नकारात्मक पक्ष से हैं। राहू के जन्म नक्षत्र भरणी हैं तथा उनके देवता सर्प हैं ज्योतिष शास्त्र में राहू को सर्प का मुख एवं केतू को उसकी पूँछ कहा गया है।

संतान कारक गुरू मंगल से मुक्त हो, लग्नेश राहू से युक्त हो या लग्न में राहू हो तथा संतानेश त्रिक भाव में हो तो संतान बाधा उत्पन्न हो जाती हैं। संतान भाव अर्थात पंचम भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहू हो तथा संतानेश एवं लग्नेश दोनो ही बलहीन हो तब संतान बाधा की संभावना होती हैं। कर्क या धनु लग्न में संतान भावस्थ राहू, बुध से युक्त या बुध से दृष्टि रखता हो, संतान कारक गुरू राहू से युक्त हो तथा संतान भाव पर पंचम शनि से दृष्टि हो तो संतान बाधा उत्पन्न होती हैं।

यदि जातक की जन्म पत्रिका में लग्न में पंचम भाव में राहू, गुरू का अभाव रहता हैं। राहू, गुरू की युति होने पर सर्प दोश से भी संतान बाधा उत्पन्न होती हैं। यदि पंचमेश या पंचम भाव पर शुभ ग्रह का प्रभाव न हो तो संतान का अभाव होता हैं। बृहस्पति को संतानकारक कहा गया हैं। पंचम से पंचम अर्थात नवम स्थान से भी संतान का विचार होता है। पत्नि स्थान अर्थात सप्तम भाव से एकादश भाव पंचम होता हैं इसलिए वह भी स्त्री का संतान भाव हुआ। कुटुम्ब स्थान से परिवार की संख्या व्यक्त होती हें। इस प्रकार संतान का विचार पंचम, नवम, एकादश एवं द्वितीय भाव तथा उसके स्वामियों के बलवान और गुरू की स्थिति के आधार पर किया जाता हैं।

यदि जन्म पत्रिका में अष्टम भाव में शुक्र, गुरू एवं मंगल की युति हो तो भी संतान का अभाव होता हैं। इन सभी का बली होना संतान प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं। जन्म पत्रिका में यदि काल सर्प योग का संबंध पंचम भाव या पंचमेश से हो तो संतान सुख में बाधा आती हैं । जन्म कुण्डली में पूर्ण कालसर्प योग होने तथा पंचमेश राहू के साथ में होने, पंचम भाव में पापग्रह हो या पंचम भाव को देख रहे है तो भी जातक को संतान सुख प्राप्त नहीं होता हैं। जन्म कुण्डली में कालसर्प योग होते हुए यदि पंचमेश 6 , 8 , 12 भाव में तथा पाप ग्रहों की दृष्टि में स्थित हो तो ऐसी जातक को संतानोत्पत्ति में बाधा आती हैं।

उपाय :–

1. महर्षि पाराशर ने इस पूर्व जन्म कृत श्राप अर्थात कालसर्प दोष के कारण संतान न होने के श्राप से मुक्ति प्राप्ति के अनेक उपाय बताए हैं इन उपायों में प्रमुख हैं नाग पंचमी को कालसर्प योग शांति पूजा, यज्ञ अनुष्ठान आदि करवाकर मनवांछित लाभ प्राप्त किया जा सकता हैं। इसके कारण पूर्व जन्म कृत दोष मिट जाते हैं यह पूजा दो तीन बार करवानी चाहिए।

2. यदि किसी स्त्री की कुण्डली इस योग से दूषित हैं तो उसे नागपंचमी के दिन वट वृक्ष की 108 प्रदक्षिणा लगानी चाहिए।

3. पति–पत्नि को नियमित रूप से सर्प सुख का पाठ करना चाहिए।

4. नागपंचमी का व्रत करें। नवनाग श्रोत का पाठ करें।

5. सायंकाल पीने के पानी रखने के स्थान पर तेल का दीपक 45 दिनों तक प्रतिदिन जलावे।

6. यदि जातक के शत्रु अधिक हो या कार्य मे निरन्तर बाधा आती हो तो जिस वैदिक मंत्र से जल में सर्प छोड़ते हैं उसको नित्य तीन बार, स्नान, पूजा–पाठ करने के बाद पढे। भगवान भोलेनाथ की कृपा से उसके सभी शत्रु शीघ्र नष्ट हो जावेगें। यह मंत्र अद्भूत व अमोघ हैं परन्तु इसका प्रयोग गुरू की आज्ञा लेकर ही करना चाहिए।

7. शिव मंदिर में पॉच तुलसी के पौधे या पॉच शिव मंदिर में एक–एक बिलपत्र या रूद्राक्ष का पौधा लगाने से भी कालसर्प दोष का शमन होता हैं।

8. अपने घर में मोर पंख लगावें।

9. पक्षियों को अनाज या जौ डाले अथवा जल में प्रवाहित करें। चिटियों को आटा या भाकर का बुरा डाले। अमावस्या के दिन अग्नि को भोजन करावे।

10. पित्रों को अमावस्या पूर्व चतुर्दशी को नियमित धूप देवें। आमावस्या को ब्राह्मण भोजन करावे।

उक्त उपाय अपनी सामर्थ अनुसार अपनाकर कालसर्प दोष के दुष्प्रभावो से कुछ हद तक कमी की जा सकती हैं तथा पिडित व्यक्ति को लाभ होगा।

❋ ❋ ❋

जन्म कुण्डली आईना है आपके जीवन का

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

समय कभी एक सा नहीं रहता। ग्रह नक्षत्र बदलते रहते हैं और परिस्थितियाँ भी। दशाएं अपना प्रभाव दर्शाती हैं ो आकश में भ्रमण करने वाले ग्रह भी। जन्म कुंडली एक स्थूल रुप है, आपके जीवन का। समय पर कालनेमी (ज्योतिषी) की सलाह लेकर आप आने बाली कठिनाईयों, परेशानी को जानकर सावधान रह सकते हैं। एक डॉक्टर आपके रोग होने पर ही रोग के बारे में बता पायेगा, जबकि एक ज्योतिषी कई वर्ष पूर्व आपको कब, कौन सा रोग होगा इसकी चेतावनी दे देगा। आप ज्योतिषी की सलाह लेकर ग्रहों के दुषप्रभाव को कम कर सकते हैं। ज्योतिष के कई महायोग हैं जो व्यक्ति को जीवन की बुलन्दियों पर पहुँचा देते हैं तो कई दुर्योग भी हैं, जो व्यक्ति की भरपूर मेहनत को सफल नहीं होनें देते हैं। समय पर इन्हीं योगों को जानकर आप उपाय कर सकते हैं। जैसे रत्न धारण, हवन यज्ञ, ग्रहों का दान, ग्रहों के जाप, ग्रहों के यंत्र धारण आदि के द्वारा।

प्रत्येक जन्मपित्रका एक पतिव्रता स्त्री के समान होतीहै। जिस प्रकार एक पतिवृता स्त्री जीवन भर एक ही पति का वरण कर उसके अधीन रहती है, ठीक उसी प्रकार किसी जातक की जन्मपत्रिका किसी एक ही ज्योतिष के साथ रहनी चाहिए। बार–बार ज्योतिषी बदलते रहने से सही भविष्यकाल प्राप्त नहीं हो सकता तथा जन्मपत्रिका निष्प्रयोजन हो जावेगी।

आधुनिक समय में जन्मपत्रिका कम्प्यूटर से बनवाकर किसी ऐसी ज्योतिषी को दिखाऐं जिसे फलादेश का व्यक्तिगत अनुभव हो तथा गणित भली–भांति जानता हो। लोगों की संतुष्टि हेतु प्रचुर समय देकर अच्छी बुरी समस्त घटनाओं को बतायें। बुरी घटनाओं को अनिवार्य रुप से बतायें चाहे वे कटु सत्य क्यों न हो, क्योंकि ज्योतिष अर्थात प्रकाश में समानता का गुण है। वह अच्छी–बुरी दोनों जगहों पर पड़ेगा। ऐसी परिस्थिति में अच्छी बातें पूछने वाला प्रश्नकर्ता व अच्छी बातें बताने वाला ज्योतिषी दोनों ही दोषी हैं। ज्योतिष विद्या के साथ विश्वासघात करने वाले हैं। अतः एक ही अनुभवी ज्योतिषी को बार–बार अपनी कुण्डली दिखलायें। इससे आपकी सतुष्टि निश्चित ही होगी। शंकाओं और बहमों के चक्कर में उलझकर अनेक ज्योतिषयों को जन्म पत्रिकाऐं दिखाते फिरना अज्ञानता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं। अतः योग्य एवं लम्बे समय के अनुभवी ज्योतिषी का चयन करें उसमें मागर्दश लेवें। इतना होने के बाद भी यदि कोई जातक नहीं समझे तो फिर उस जैसा अभागा कोई और न होगा। यदि सौभाग्य से उपरोक्त योग्यता व अनुभव वाला फलादेशकर्ता मिल जावे तो उससे जी भरकर लाभ उठाना बुद्धिमानी होगी।

भविष्य फलादेश के इच्छुक व्यक्तियों को चाहिए कि वे भविष्य फल में बतलाए गये पूजा–पाठ, हवन, दान आदि को पूर्ण विश्वास व श्रद्धा के साथ करवायें तभी कार्यो में सफलता निश्चित है। मन में शंका, कुतर्क आदि करने से कोई लाभ न होगा। आपकी समस्याओं का समाधान जन्म कुण्डली, प्रश्न कुण्डली अथवा हस्तरेखा से किया जा सकता है। ❋ ❋ ❋

पूजन में प्रयुक्त वस्तुओं का महत्व

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
फोन. 9412257617, 0562-2571618

भगवान के पूजन में विभिन्न वस्तुएँ जैसे पान, सुपारी, प्रसाद(मिष्ठान), सिक्का, पानी, चन्दन, रोली, पुष्प, दीपक, अगरवत्ती, कुंकुम, धूपवत्ती, हल्दी, फल आदि प्रयुक्त होते है। इन सबका अपना–अपना महत्व है। पान–सुपारी और सिक्का ऐसी वस्तुएँ है। जिनके बिना पूजा संपन्न नही हो सकती है। पूजा में पान एंव सुपारी का प्रयोग नारियल की तरह उत्तर–दक्षिण की एकता का प्रतीक है। पूजा में यह उसी प्रकार श्रेष्ठ माना गया है। जिस प्रकार स्वागत में सुपारी युक्त पान पेश किया जाता है। यह सम्मानजनक माना जाता है। ठीक वैसे ही भक्त के अवकरण में बैठे भगवान की प्रतिमा के समक्ष वह सब कुछ अर्पित करता है। जो सम्मान और समर्पण का सूचक हो चूँकि पान और सुपारी के वृक्ष दिव्य है। इसीलिए सभी देवताओं का प्रिय हैं।

सबसे पहले स्नानम् समर्पणम् कहते हुए चम्मच या पान के पत्ते से जल चढाते है। जिसका तात्पर्य यह है। कि हम वन, मन, धन, तथा भावना रूपी चार शक्तियाँ से समाज की सेवा कर सकें। बुराइयों को छोड़कर स्वच्छ निर्मल और पवित्र समाज बना सके। इसी के प्रतीक रुप में चार चम्मच जल भगवा के चरणों में समर्पित करते हैं। अछत समर्पयामि कहकर जो चावल चढ़ाए जाते हैं उसका तात्पर्य यह है कि हम जो अनाज, पैसा, संपत्ति कमाते है उसमें से एक अंश भगवान और उसके बनाए प्राफया के लिए लगाएं। पूरा का पूरा स्वयं हजम न करें।

चंदन लगाने का तात्पर्य यह है कि हमारे जीवन का अंश–अंश चंदन की भांति खुशबूदार है हम दूसरों की सेवा में अपने को समर्पित करना सीखे। जो चंदन की तरह बनते है वे भगवान को प्रिय होते है।

पुष्पम समर्पयामि कहकर जो पुष्प चढ़ाये जाते है उसका तात्पर्य यह है कि पुष्प की तरह ही हमारा जीवन हमेशा खिलता रहे, हंसता रहे, प्रसन्न रहे। फूल की तरह एक होकर समर्पित जीवन जीने और लोक मंगल के लिए अपना सर्वस्व सर्वत्र बिखेरने तथा अपनी सुगंध से सब को मोहित करने का हम अपनाऐं।

दीपक तभी प्रकाशित होता है जब उसमें पात्र, घी, और बत्ती तीनों का संयोजन हो यानि पवित्र निष्ठा और समर्पयामि। घी को रोकने के लिए जैसे पात्र की आवश्यकता होती है ठीक वैसी ही पवित्रता हममें भगवान की सेवा की होनी चाहिए। समाज सेवा और सत्कर्मी के प्रति निष्ठाभाव ज्ञान का प्रकाश जन–जल तक पहुचाने भक्तों को राह दिखाकर उनका मार्ग प्रकाशित करने और अंधेरा दूर करने की प्रतिज्ञा लेकर हम स्वयं को भगवान के सामने आत्मसर्मयण करके प्रार्थना करें। यह दीप जलाने का सही अर्थ है।

अगरबत्ती, धूपबत्ती जलाने से सकारात्मक विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिससे मन में नकारात्मक विचार कम आते हैं और स्वास्थ्य अच्छा रहता है साथ ही इनके जलाने का तात्पर्य यह है कि

शेष पेज 18 **पर**.....

घर में पूजा स्थल कहाँ और क्यों?

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

विभिन्न धर्मग्रन्थों के अनुसार ईश्वर को कण–कण में विद्यमान माना जाता है और इसी कारण ईश्वर की कृपा दृष्टि दसों दिशाओं में रहती है। वास्तुशास्त्र में पूजा के स्थान को ईशान कोण में होना फलदायक बताया जाता है यदि किसी भवन अथवा व्यवसायिक स्थल में पूजा का स्थान ईशान कोण में नही होता है और परिवार के सदस्यों के साथ कोई परेशानी आ रही हो तो उनके दिमाग में एक यही बात आने लगती है कि कहीं परिवार की परेशानी का कारण पूजा के स्था का गलत होना तो नही हैं वास्तुशास्त्री द्वारा पूजा स्थल को ईशान कोण में स्थापित करने की सलाह अत्यन्त उचित है क्योंकि पूरे भवन में यह दिशा सबसे शक्तिशाली दिशा मानी जाती है। इस स्थान पर पूजा अर्चना से ईश्वरीय मार्गदर्शन तो मिलता ही है उसके साथ–साथ सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह भवन में सुख शान्ति व समृद्धि के रुप में विद्यमान रहता है भवन की किस दिशा में पूजा स्थल के स्थान का क्या प्रभाव होता है इसके वारे में कुछ जानकारी निम्नवत है–

1. **ईशान कोण**–इस दिशा में पूजा का स्थान होने से परिवार के सभी सदस्य सात्विक विचारधारा के होते हैं सभी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है इस दिशा में स्वयं शिव निवास करते है सब दिशाओं में शुभ स्थान पूजा के लिये ईशान कोण ही माना जाता है।

पूर्व दिशा–पूर्व दिशा सूर्य की दिशा मानी जाती है इस स्थान पर पूजा का स्थान होने से भवन का मुखिया ज्ञानवान होता है वह समाज में पद प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य की प्राप्ति करता है पूर्व दिशा की ओर मुख करके की गई पूजा अच्छा फल देनी वाली कही गई है।

उत्तर दिशा–उत्तर दिशा की ओर मुहँ करके की गई पूजा उत्तम फल देने वाली कही गई है यह बुध की दिशा मानी जाती है इसे धन अध्यक्ष कुबेर की भी दिशा कहते है। इस दिशा में बना पूजा स्थल व्यक्ति को सुख संपदा व संतोष में वृद्धि करता है व परिवार में सभी बुद्धिमानी पूर्वक कार्य करते है।

आग्नेय कोण–दक्षिण पूर्व के मध्य भाग आग्नेय दिशा में बना पूजा स्थल होने से भवन के मुखिया को स्वास्थय सम्बन्धी समस्यायें बनी रहती है वह अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है वह हर कार्य का निर्णय स्वंय लेता है।

दक्षिण दिशा–इस दिशा में बना पूजा स्थल होने से व्यक्ति का ध्यान इधर–उधर भटकता है व्यक्ति क्रोधी व जिद्दी स्वभाव का होता है।

वायव्य दिशा इस कोण में बना पूजा स्थल भी शुभ फल देने वाला कहा गया है भवन का मुखिया यात्रा करने का बहुत शौकीन होता है उसका मन अशांत व चंचल होता है ऐसे मुखिया की स्थिति सदैव समान रहती है।

पश्चिम दिशा– पश्चिम दिशा में पूजास्थल होने पर भवन का मुखिया धार्मिक उपदेश अधिक देता है वह लालची स्वभाव का होता है ब्रह्म स्थल–भवन के मध्य में बना पूजा स्थल भी अत्यन्त शुभ होता है इससे पूरे घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है।

नैऋत्य कोण–दक्षिण पश्चिम के मध्य भाग में वने पूजा स्थल पर भी यदि पूर्ण श्रद्धा भाव से लगा कर पूजा करनी चाहिये जिससे परिवार के किसी भी सदस्य को कोई बीमारी न हो। पूजा स्थल बनाते समय कुछ सावधानियाँ भी अवश्य रखें–

1. पूजा स्थल सीढ़ियों के नीचे ना बनायें।
2. पूजा स्थल के पास अथवा सामने शौचालय न हो।
3. शयन कक्ष में पूजा का स्थान न रखें।
4. रसोई घर में मन्दिर ना बनवायें।
5. पूजा का स्थान भवन में एक ही स्थान पर बनायें।
6. पूजा के स्थाान पर रोशनी की भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए वहाँ अन्धकार नही रहना चाहिये।

पूजा स्थल एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है चाहे वह भवन के लिये हो या दुकान अथवा व्यावसायिक केन्द्र के लिये इसे बनाने के लिये ऐसी दिशा का चयन करें जो पूरे परिवार को सुख शान्ति दें, पारिवारिक सामन्जस्य आपस में बनायें रखें। अतः घर, मकान खरीदते समय जितना ध्यान हम अन्य बातों का रखते है उससे अधिक ध्यान हमें मंदिर की दिशा व स्थान निर्धारित करने को रखना चाहिये ताकि ईश्वररुपी शक्ति स्रोत का परिवार के सभी सदस्यों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ें। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

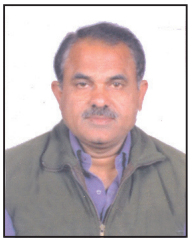

गो-मूत्रकी तुलना में कोई महौषधि नहीं

डॉ. सतीश शर्मा
पशुधन प्रसार अधिकारी
पशुपालन विभाग उ. प्र.
मो. 9412254180

पिछले क्रमांक से आगे.....

जरथुश्ती धर्म का एक अत्यन्त महान् और पवित्र उत्सव 'निरग दीन' है। उसके बैल के मूत्र को इकट्ठा किया जाता है औश्र अभिमन्त्रित करके सँभाल कर रख दिया जाता है। सारे शुद्धि–करणात्मक अवसरों पर इस मूत्र का उपयोग आवश्यक है। इसका पान किया जाता है तथा इसको शरीर पर भी मला जाता हैं। जैसे हिन्दू धर्म में गाय के प्रति श्रद्धा या मान्यता है वैसे ही पारसी धर्म में बैल श्रद्धा का पात्र है।

बेलफास्ट के प्रो. सिमर्स तथा अल्स्टर के प्रो. कर्क ने गोमूत्र के महत्त्व के विषय में अनेकों प्रयोग किये हैं और उनका कहना है कि गोमूत्र रक्त में रहने वाले दूषित कीटाणुओं का नाशक होता है। सजीव मांस–पेशी के लिये यह हानि नहीं पहुँचाता, घावों की विषक्तता को दूर करता है और पुराने दोष से रक्तद्वारा संक्रान्त घाव में बढ़ते हुए पीब को रोकता है। मलहम–पट्टी की प्रारम्भिक चिकित्सा में इसके प्रयोग से बहुत ही आश्चर्यजनक परिणाम देखने में आते हैं।

जिगर और प्लीहा के बढ़ने से उदर–रोग हो गया हो तो पुन र्ववा के काढ़े में आधा गोमूत्र मिलाकर पिलाया जाय। इससे उदर–रोग अच्छा हो जायगा। इस सम्बन्ध में अक्कल कोटके डॉ. चाटी अपना अनुभव इस प्रकार बतलाते हैं–

चालीस वर्ष की अपनी नौकरी में मैं कितने ही जलोदर–रोगियों का इलाज किया और पेट चीर कर 2–3–4 बार भी पेट का पानी निकाल दिया, किंतु उनमें से अधिकांश रोगियों की मृत्यु हो गयी। मैंने सुना और आयुर्वेदिक ग्रन्थों में पढ़ा भी था कि इस रोग पर गोमूत्र का उपयोग बहुत लाभकारी होता है, फिर भी मुझे विश्वास नहीं होता था। एक बार एक साधु महात्मा ने गोमूत्र के गुणों का बहुत वर्णन कर कहा कि इसका जलोदर पर बहुत ही अच्छा उपयोग होता है। मैंने गोमूत्र का प्रयोग करके देखा तो विलक्षण लाभ हुआ।

जलोदर में गुर्दे काम नहीं करते, अतएव मूत्र खुलकर नहीं होता। गोमूत्र पीने से गुर्दे के विकार को निकलने में सहायता मिलती है। मूत्र खुलकर साफ होने लगता है, जिससे रोग दूर हो जाता है। इस विषय में निम्नलिखित घटना बड़ी ही उद्बोधक है–

बरेली में एक भिखारी भीख माँगकर निर्वाह किया करता था। एक बार उसे जलोदर रोग हो गया। पेट फुलकर घडे–जैसा हो गया, भिखारी सूखकर अस्थि–चर्म मात्र रह गया। वह वहाँ के सिविल अस्पताल में पहुँचा। कम्पाउंडर उसे सिविल सर्जन के पास ले गया। सिविल सर्जन ने देखकर कहा–'इसकी चिकित्सा यहाँ नहीं हो सकती। यह तो ऑपरेशन करते–करते ही मर जायगा।' बेचारा निराश होकर नगर के बाहर साधुओं की एक टोली में जा बैठा, एक साधुने उससे पूछा–'क्यों? कैसे आया?' भिखारी ने कहा–'ऐसा कोई उपाय बतायें, जिससे यह रोग दूर हो जाए'। साधुने कहा–'एक छटाँक गोमूत्र प्रातः और एक छटाँक सायंकाल प्रतिदिन एक वर्षतक पीओं, खाने के लिये जो मिल जाय वही खाओं।' भिखारी ने एक वर्ष तक गोमूत्र का सेवन किया। एक वर्ष

शेष पेज 19 **पर**.....

सूर्यनमस्कार ॐ प्रणामासन

योगाचार्य प्रभुदयाल गुप्ता
Ph: 0562-2410609, 9412724151

पंचम स्थित : दन्डासनः– ओउम् खगाय नमः मंत्र का उच्चारण करते हुये बाये पैर को भी पीछे दायें पैर के बराबर ले जायें। पूरे शरीर की आकृति एक दण्ड के रुप में ले जायें। दोनों पंजे आस से लगे रहें, एड़ी, कमर और सिर बिल्कुल एक सीधी रेखा में हो जायें। शरीर तना रहें, पूरे शरीर का भार दोनों हाथों के पंजों और दोनों पैर की उंगलियों पर टिका रहे।

श्वांस भी अन्दर रुका रहे। इस प्रकार इस आसन से पूरे शरीर की मांस पेशियों के विकार हटते हैं, रीड़ के विकार भी दूर होते है और बाजू सबल बनते है।

6. षष्टम स्थिति : अष्टांग आसनः– ओउम् पूष्णे नमः मंत्र का जाप करें श्वांस रोक कर बाह्य कुम्भक करे अर्थात श्वास को बाहर रोंके और आप अपने शरीर को अष्टॉग आसन में ले जाये। (अर्थात हमारे शरी के आठ अंग आसन से स्पर्श करें) और साष्टाँग प्रणाम करें। दोनों हाथों को कोहनियों से मोड़कर आसन पर रखें मस्तष्क और बक्षः स्थल भूमि (आसन) के समान्तर, घुटनें भूमि पर स्पर्श करते रहें, कमर ऊपर उठी रहे, दोनों पंजे भी आसन पर टिके रहें, आँखें बन्द रहें हो सके तो हनु (ठुड्डी) का स्पर्श वक्ष से रहें। जब तक आसानी रुके रहें। वैसे इस आसन को थोड़े समय ही करें। इस आसन में शरीर को ऊर्जा मिलती है। वाहि (वाह्य) कुम्भक करने के कारण कंठ सम्बन्धी विकार नहीं होते है।

❋ ❋ ❋

श्री राम चरित मानस के सातों काण्ड के नामकरण में छिपा है आध्यात्मिक रहस्य ?

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

राम! तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय, यह सहज संभाव्य है।

राष्ट्र कवि श्री मैथिली शरण गुप्त अपनी इन पक्तियों के माध्यम से भगवान श्री राम के चरित्र को नमन करते है, जिनकी सहज कृपा ने गोस्वामी तुलसी दास जी को श्री राम चरित मानस को लिपि बद्ध करने की प्रेरणा दी।

महाकवि सूरदासजी ने तुलसी दास जी की भक्ति रचनाओं के बारे में कहा था कि उनकी लेखनी से उकेरी गई एक–एक चौपाई तो साक्षात् महामंत्र है, वेदमंत्र है, जीवन मूल्यों को आकी है– भविष्य दर्शन को साधारण कविता की सीमाओं में नही बाँधा जा सकता है।

गोस्वामी जी ने श्री रामचरित मानस के सात काण्डों के माध्यम से भक्ति के सात सोपानों की अवधारण निरूपित की है, तभी तो उन्होने प्रत्येक काण्ड के अन्त में "सोपान समाप्तम्" का उल्लेख किया है। रामायण के सातों काण्ड के नामकरण में भी रहस्य छिपा हुआ है जो प्रत्येक काण्ड के आध्यात्मिक भाव को उजागर करता है।

बालकाण्ड यह सन्देश देता है कि मनुष्य को भक्ति पथ में प्रवेश करने के लिए स्वयं को बालक जैसे निर्दोष निर्विकार और निश्चलमन का बनाना होगा। इस काण्ड में राम को भोला, आज्ञाकारी और अभिमान शून्य बालक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। भोले एवं सरल मन के बच्चों की पुकार ईश्वर जल्दी सुनता है। बालक की दृष्टि एवं मन पवित्र होता है। बालक जैसा अमानी एवं निंविकार व्यक्ति ही सत्यधाम (जनकपुरी) में प्रवेश पा सकता है। पारवारिक सम्बन्धों की निभाने की शिक्षा बालकाण्ड से ही ग्रहण की जा सकती है। बालकाण्ड का यही भाव है। अयोध्या काण्ड में युद्ध नही, बैर नहीं, कलह नहीं, सभी पात्र अपने अपने ढंग से अयोध्या (मातृभूमि) के आस्तित्व की रक्षा करतें हैं। राम को रावण का वध करना था, इसी प्रारब्ध के कारण कैयी के मन में विषमता पैदा हुई और राम का वन गमन हो जाता है। जो निष्पाप है, उसका स्थान भरत की तरह प्रभु के चरणों में है और उसका पुर्नजन्म नहीं होता। छोटे से जीवन में बैर पालकर मन को विचलित करना ठीक नहीं सन्तों के चरणों का आश्रम लेना चाहिए।

अरण्यकाण्ड वासना एवं लोभ रहित जीवन जीने का मार्ग बताता है। वासनाओं का गुलाम पराबलम्बी एवं डरपोक होता है–वहीं इसका विजेता सत्यवादी वीर और पराक्रमी होता है। आग्नि में घी डालने से आग्नि का शमन नहीं होता है, लेकिन सयंम रुपी जल से ज्वाला शांत हो जाती है। लोभ के कारण जानकी को राम से वियोग सहना पड़ा। इसी काण्ड में सूपनखा एवं सबरी दोनों का चरित्र है। सूपनखा वासना एवं सबरी भक्ति की प्रतीक है। राम वासना का त्याग कर भक्ति को अपनाते हैं औश्र सबरी के झूठे बेर खाकर अपने उद्देश्य की पूर्ति के मार्ग पर चल देते हैं। संयम को प्रखर करने के लिए अरण्य (वन) के एकान्त एवं शांत जीवन को राम अपनाते हैं।

किष्किन्धा काण्ड जीव और ईशा का मैत्री चरित्र उजागर करता है। सुग्रीव के साथ राम की मित्रता गुरु (हनुमानजी) के द्वारा ही सम्भव हो सकी। बाली का वध वासना एवं अंहकार पर भक्ति की विजय है। जीव के साथ ईश का मिलन काम के त्याग से ही सम्भव है। ईश्वर को छोड़ सम्पूर्ण जगत काम मय हैं काम की मैत्री छोड़े बिना राम से मैत्री सम्भव नहीं। हनुमान जी जैसा सलाहकार ही जीवन की दिशा बदल सकता है।

सुन्दर काण्ड रामायण का सबसे सुन्दर और श्रेष्ठ काण्ड है। जीवन उसी व्यक्ति का सुन्दर है, जो निष्काम और परोपकार के लिए जीवित है। हनुमान जी मैनाक पर्वत पर विश्राम किए बिना, सुरत्या की वासा रुपी जिव्हा से बचकर रामभक्त विभीषण से भेंट करते हैं तथा पराभक्ति के दर्शनोपरान्त ही आहार ग्रहण करते हैं और दुष्प्रवृत्तियों (लंका) का दहन करते है। हनुमानजी ने किष्किन्धा काण्ड में सुग्रीव को राजा बनबाया, उसी प्रकार सुन्दर काण्ड में भी विभीषण का राजतिलक करवाया। परोपकार के कारण ही इसे सुन्दरकाण के नाम से जाना जाता है।

लंका काण्ड में राक्षसों के विनाश से पूर्व श्री रामेश्वर महादेव की पूजा यह सन्देश देती है कि शिव की कृपा से ही राक्षसों के शरीर शव में परिवर्तित हो सकते हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार का विनाश राम के द्वारा ही सम्भव है। जानकी की अग्नि परीक्षा, मर्यादा एवं समभाव का प्रतीक है।

उत्तर काण्ड में मनुष्य जीवन के सभी प्रश्नों का उत्तर परिलक्षित है। जो जीवन के पूर्वाध में भ्रान्तियों का सामना संयम और परोपकार से करता है, उसके जीवन का उत्तरार्ध ज्ञानभक्ति से भर जाता है। ज्ञानमार्ग दुर्गम है, लेकिन भक्ति मार्ग सुगम है। ईश्वर के प्रति निष्काम से अश्रु व्यक्ति के नेत्रों से निकलकर गालों पर जब लुढके लगते हैं, तो साक्षात ईश्वर को दर्शन देने के लिए बाध्य होना पड़ता है। श्री राम चरित्र मानस के सप्तम सोपान (भक्ति मार्ग) पर पहुँचकर अन्त में गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी माँ प्रभु चरणों में अर्पित कर अपनी लेखनी को पवित्र बना दिया

"कामिहि नारि पिआरि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम,
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम।"

❋ ❋ ❋

16 जून - 15 जुलाई

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– इस मास से स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– ध न लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा। शत्रु कमजोर रहेंगे। इस माह में कष्ट होने का भय रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नेत्र रोग का भय रहेगा।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। शत्रु का भय रहेगा। मास के अन्त तक खर्चा अधि क होगा। पत्नि से लाभ होगा।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी।

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में वायु विकार होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। व्यवसाय मध्यम रहेगा। गुप्त शत्रु से बचें। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख मिलेगा। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। नई योजनायें बनायेंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। खर्चे अधिक होंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आर्थिक परेशानियों लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। मास के अन्त में शुभ रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– कारोबार ठीक रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। मास का अन्त कष्ट प्रद रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यात्रा का सुख मिलेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जून	जुलाई
16 हरगोविन्द सिंह जयंती,	**1** अमावस्या (स्नान/दान)
19 श्री गणेश चतुर्थी व्रत	**3** रथयात्रा जगन्नाथपुरी
23 शीतलाष्टमी (सीताष्टमी) व्रत	**4** श्री विनायक चतुर्थी व्रत
27 योगिनी एकादशी व्रत	**5** स्कन्ध पंचमी **6** कुमार षष्ठी
28 प्रदोष व्रत	**7** सूर्य सप्तमी
	8 दुर्गाष्टमी **9** भण्डली नवमी
	11 देवशयनी एकादशी व्रत, विश्व जनसंख्या दिवस, **12** प्रदोष व्रत
	14 पूर्णिमा व्रत
	15 गुरु पूर्णिमा (मुड़िया पुनो)

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नहीं हैं।
गृह प्रवेश मुहूर्त
नहीं हैं।
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जून – 16
जुलाई – 3, 6, 7, 8, 10
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जून – 22, 26, 29
जुलाई – 3, 7

सर्वार्थ सिद्ध योग

जून	जुलाई
26 ता. सू.उ से 17:04 तक	03 ता. सू.उ. से 21:44 तक
28 ता. सू.उ. से 21:09 तक	11 ता. 10:43 से सू.उ. तक
29 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	

16 जुलाई - 15 अगस्त

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में पित्तविकार रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस मास मे आर्थिक लाभ होने की संभावना रहेगी। आपको अपनो का सहयोग मिलेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। क्रोध मे निरन्तर वृद्धि होगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में आपका शारीरिक स्वास्थ्य खराब रहने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास मे रक्त-पितर जैसे रोगो से आप ग्रस्त रहेंगे। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपका कारोबार सही चलेगाा। धन हानि होने की संभावना रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। संबध में या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। कारोंबार या व्यवसाय व नोकरी में भी कुछ रूकावटे उतपन्न होंगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानिया भी लगी रहेंगी। आपको प्रियजनो का सुख एवं साथ मिलेगा। आपको यात्रा में शारीरिक कष्ट होना भी सभंव हैं। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते–वृथाविवाद से दूर रहें। आपको राज्य से भय रहेगा। प्रियजनों मे से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कारोबार, व्यवसाय ठीक चलेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास मे स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहेगा। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगें।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। कारोबार,व्यवसाय ठीक चलेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु किर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों मे से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में आपको मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। मास के अन्त मे अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जुलाई	अगस्त
18 श्री गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत, **19** मंगला गौरी व्रत, **21** षष्ठी, **22** शीतला सप्तमी, **23** कालाष्टमी, बाल गंगा–धर तिलक जयंती, **25** श्रावण सोमवार व्रत, **26** कामदा एकादशी व्रत, मंगला गौरी व्रत, **28** प्रदोष व्रत, **30** हरियाली अमावस्या	**1** श्रावण सोमवार व्रत, **2** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, हरियाली तीज, मंगला गौरी व्रत, **4** श्री नाग पंचमी, **5** वरुण षष्ठी, गोस्वामी तुलसी दास जयंती, **6** दुर्गाष्टमी, **7** श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर पु.दि., **8** श्रावण सोमवार व्रत, **9** पुत्रदा एकादशी व्रत, क्रांति दिवस मंगला गौरी व्रत, **11** प्रदोष व्रत, **12** चतुर्दशी व्रत, **13** पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, **15** भारतीय स्वतंत्रता दिवस,

ग्रहारम्भ मुहूर्त
अगस्त – 4, 5, 6, 8
गृह प्रवेश मुहूर्त
जुलाई – 22, 27
अगस्त– 3,4, 5, 6, 8,13
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
जुलाई – 16
अगस्त – 4, 6, 8, 10, 14
नामकरण संस्कार मुहूर्त
जुलाई –17, 18, 22, 28
अगस्त – 8, 15

सर्वार्थ सिद्ध योग

जुलाई	अगस्त
16 ता. 9:26 से सू.उ. तक	03 ता. 22:10 से सू.उ. तक
26 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	08 ता. सू.उ. से 15:36 तक
27 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	12 ता. 16:50 से सू.उ. तक
31 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	13 ता. सू.उ. से 18:05 तक

झूठी प्रशंसा

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा
मो. 9412263505

"मूर्ख व्यक्ति झूठी प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न हो जाता है।"

एक बार की बात है योवन श्रीनगर में मन्दमति नाम का एक बढ़ई निवास करता था। वह अपनी स्त्री को व्यभिचारिणी तो समझता था, किन्तु उसके पास इस बात की पुष्टि के लिए कोई सबूत नहीं था।

एक दिन उसने अपनी स्त्री से कहा, "मैं पास ही के गांव में किसी काम से जा रहा हूं" इतना कहकर वह चला गया। थोडी दूर जाकर वापस लौट आया और चुपके से पलंग के नीचे छिप गया।

उसकी स्त्री ने यह समझा कि उसका पति तो पास के गांव में किसी कार्यवश गया है, अब तो वह अगले दिन ही आयेगा। उसने अपने प्रेमी को सन्देश भेज दिया।

उसके प्रेमी को जब यह पता चला तो वह बेफिक्र होकर आ गया। वे दोनों पलंग पर विराजमान होकर एक–दूसरे से प्रेमालाप करने लगे। स्त्री का पैर पलंग के नीचे छिपे पति के शरीर को छू गया तो वह समझ गई कि उसके पति ने झूठ बोलकर उसके साथ छल किया है, इस बात से अचानक उदास हो गई।

उसे उदास देखकर उसका प्रेमी बोला, "क्या बात है, आज तू बहुत उदास है?"

प्रेमी की बात सुनकर वह बोली, "तू नहीं जानता है। प्राणों से प्यारा मेरा पति जिससे मैं बचपन से प्रेम करती हूं आज पड़ोस के गांव में गया है। जाने कहां–कहां ठहरे होंगे, क्या खाया होगा, पता नहीं कहां सोये होंगे, उनके चले जाने से तो मुझे यह घर और गांव जंगल जान पड़ता है। यह सोच–सोचकर मेरा हृदय फटा जा रहा हैं।" प्रेमिका की बात सुनकर प्रेमी बोला, "क्या वह तुमको इतना प्रिय हैं?"

"अरे धूर्त! पत्नी वही पतिव्रता होती है जो पति के निष्ठुर वचन और क्रोधभरी आंखे देखकर भी सदैव मुस्कराती रहे। चाहे पति शहर मे रहे या जंगल में, पापी हो या पुण्यात्मा, जो स्त्री अपने पति से प्रेम करती है वह संसार में सर्वाधिक भाग्यवान् होती है। स्त्रियों का भूषण उसका पति है, उससे रहित स्त्री कुरुप है। तुम तुष्ट प्रेमी हो और तुम्हारा मन चंचल है। पुण्य और पाप की तरह कभी स्त्रियों को चाहते हो, तो कभी मुंह फेर लेते हो। मुझे इतना पति से प्रेम है है कि वह चाहे तो मुझे बेच दे, देवता को चढ़ा दे या ब्राह्मण को दान दें। इससे ज्यादा क्या कहूं– उसके जीते मैं जीती हूं उसके मरने पर सती हो जाऊंगी। यह मेरी प्रतिज्ञा है, क्योंकि जो स्त्री पति की आज्ञा में चलती है, वह मरने के बाद स्वर्ग में उतने वर्ष तक रहती है जितने मानव शरीर में बाल (तीन करोड़, पचास लाख) हैं। जैसे सपेरा मन्त्रों के बल पर सांप को बिल से बाहर निकाल लेता है, उसी तरह संकट में पड़े पति को पतिव्रता स्त्री निकाल लेती है। सती स्त्री की महत्ता इतनी है कि जो स्त्री मृत पति की चिता पर छाती से लगकर प्राण त्यागती है, वह सैंकड़ों पाप करने पर भी पति संग स्वर्ग को जाती है।" बढ़ई की पत्नी ने कहा।

पलंग के नीचे छिपा हुआ बढ़ई बाहर निकलकर बोला, मैं कितना भाग्यशाली हूं, जो मुझे मधुरभाषिणी पतिव्रता और पति को चाहने वाली स्त्री मिली।" इतना कहकर प्रसन्नता में पलंग समेत दोनों को सिर पर उठाकर नाचने लगा। कथा सुनाकर तोता बोला, "इसीलिए मैं कहता हूं कि दूसरे की झूठी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न नहीं होना चाहिए।"

"बाद में वहीं के राजा ने अपने यहां की परम्परानुसार मेरा तिलक करके विदा कर दिया। वह तोता दूत बनकर मेरे पीछे आ रहा है। यह सब जानकर, अब आपको जो कहना है करिए।" बगुले ने कहा।

बगुले की बात सुनकर चकवे ने व्यंग्य से कहा, "महाराज ने विदेश जाकर भी यथाशक्ति राजकार्य किया, परन्तु मूर्खो का यही स्वभाव होता है, क्योंकि सैंकड़ों का दान करके बुद्धिमान विवाद नहीं होने देते, पर मूर्ख बिना कारण व्यर्थ में कलह का वातावरण बना देते हैं।

स्वामी हिरण्यगर्भ से चकवा फिर बोला, "महाराज! मैं अपनी सलाह एकान्त में दूंगा, क्योंकि बात चाहे कान में कही जाए तब भी ताड़ने वाले रुप–रंग चेहरे के बनते–बिगड़ते हाव–भाव से ताड़ ही लेते हैं। इसलिए सलाह–मशवरा एकान्त में ही करना चाहिए।"

राजा और मन्त्री के अतिरिक्त सभी अन्यत्र स्थान को चले गये। सबके जाने के बाद चकवा बोला, "महाराज! लगता है किसी के उकसाने पर ही बगुले ने यह स्थिति पैदा की है। शत्रु के लिए बगुला वैसे ही बड़े काम का है। जैसे वैद्य के लिए रोगी, राजपुरुषों के लिए

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 250/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 500/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतीय स्टेट बैंक खाते में 10039621088, आगरा शाखा में जमा

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562–2856666, 2525262, 9719005262
ई मेल : maheshparasar@anushthan.in

शराबी–पुजारी, विद्धानों के लिए मूर्ख और सज्जनों के लिए कुलीन लोग आजीविका का साधन होते हैं।"

"देखों कारक जो भी हो उसका निश्चय बाद में कर लेंगे। इस समय तो यह निर्णय लो कि इस स्थिति से कैसे निपटा जाए? राजा बोला।

"महाराज! पहले किसी भेदिये को भेजकर शत्रु का बल और काम जान लें। इससे शत्रु की सही स्थिति का अनुमान हो जाएगा। जिस राजा के पास गुप्तचर नहीं हैं वह अन्धा है। गुप्तचरों से ही दूसरे देशों के अच्छे–बुरे कार्यो और नीतियों का ज्ञान होता है। आप अपने गुप्तचर को कहें कि वो अपने साथ कोई विश्वास पात्र साथी लें जाएं। वह स्वयं तो वहीं रहे और वहां की समस्त सूचनाएं एकत्र करके अपने साथी हमारे पास भिजवा दें। गुप्तचरों के टिकने के लिए तीर्थ स्थान, मन्दिर, साधुओं के आश्रम ठीक रहते हैं। ऐसी जगहों पर तपस्वियों के वेश में ज्ञान–प्राप्ति के बहाने सूचनाएं एकत्र करने का उचित अवसर मिल जाता है। गुप्तचरी वही कर सकता है जो जल या थल में समान रुप से आ–जा सके। मैं तो आपको यही सलाह दूंगा कि आप बगुले की ही गुप्तचर बनाकर भेज दीजिए, वह अपने साथ में कोई दूसरा बगुला ले जाए और परिवार के अन्य लोग राजमहल में रहें। यह कार्य अत्यन्त गुप्त रीति से होना चाहिए। चार कानों में गुप्त बात चली जाए तो वह गुप्त नहीं रहती। इसलिए राजा को चाहिए कि वह यह कार्य भी अत्यन्त गुप्त रीति से करें और अपने मंत्री से एकान्त में सलाह–मशवरा करें। नीतिज्ञों का यह दृढ़ मत है कि मंत्रणा का भेद खुल जाने पर जो बुराइयां आती हैं वे सभी सुधर नहीं सकतीं।" मंत्री चकवा बोला।

स्वामी ने सोच–विचार कर कहा, "मुझे गुप्तचर तो उत्तम मिल गया है।" मंत्री चकवा बोला, तब युद्ध में विजय भी हमारी होगी।

तभी द्वारपाल ने महाराज से कहा, "महाराज! एक तोता दूत, आने की आज्ञा चाहता हैं।"

द्वारपाल की बात सुनकर राजा ने चकवे की ओर देखा।

चकवे ने कहा, "उसे ले जाकर अतिथि गृह में ठहराओं। बाद में उसे दरबार में लेकर आ जाना।"

"जैसी आपकी आज्ञा।" कहकर द्वारपाल लौट गया और उसने तोते को अतिथि गृह में ठहरा दिया। द्वारपाल के जाने के बाद स्वामी बोले, "युद्ध तो सामने आ गया लगता है।"

"महाराज! हमें अभी से युद्ध की घोषणा नहीं करनी चाहिए। वैसे भी जो मंत्री राजा को बिना विचारे युद्ध और अपनी भूमि त्यागने की सलाह देता है, वो निन्दित है, शत्रु को जीतने के लिए युद्ध ही सही साधन नहीं हैं, क्योंकि युद्ध में दोनों पक्षों की जीत की आशंका बनी रहती है। मेरे अनुसार तो शत्रु को मधुर वचनों से, धन देकर तोड़–फोड़ करके या इन तीनों से एक साथ अगल–अलग शत्रुओं को वश में करना चाहिए, परन्तु युद्ध कभी नहीं करना चाहिए। जब तक युद्ध में नहीं जाते तब तक सब स्वयं को शूरवीर समझते हैं। दूसरों की सामर्थ्य जाने बिना सभी को अभिमान होता है। महाराज! पत्थर की चट्टान लकड़ी के सहारे जितनी आसानी से उठायी जा सकती है उतनी अन्य किसी वस्तु से नहीं। छोटे उपाय से अधिक लाभ हो ऐसा करना चाहिए। युद्ध को देखकर शीघ्र उपाय कीजिये। जैसे जुताई–बुआई की मेहनत के कुछ समय बाद ही फसल मिलती है, वैसे ही नीति के अनुसार उठाए गए रक्षा के प्रयास का फल भी कुछ देर बाद ही मिल सकता है, परन्तु नहीं।"

बुद्धिमान सदैव विपत्तियों को दूर से देखकर सावधान हो जाते हैं और उससे बचने का प्रयास करते हैं, मुसीबत सिर पर आ जाए तो डटकर सामना करते हैं अर्थात् बुद्धिमान धैर्य से मुसीबत–काल को पार कर जाते हैं। महाराज! शत्रु में ही क्रोध करने से सफलता में बाधा आ जाती है। ठण्डा पानी पहाड़ को उखाड़ डालता है। शान्ति में जितनी शक्ति है उतनी क्रोध में नहीं। इसलिए ठण्डे दिल से दूसरे के बचन सुन लेने चाहिएँ; फिर जो उचित हो उसे करना चाहिए। इस तरह करने पर सफलता अवश्य मिलती है। वैसे भी स्वामी चित्रवर्ण बहुत बलवान् हैं। बलवान् के साथ युद्ध करना कहीं का शूरतापन नहीं है, क्योंकि मनुष्य हाथी से लड़कर स्वयं नष्ट हो जाता है। जो उचित अवसर जाने बिना शत्रु से लड़ पड़ता है, वह बहुत ही मूर्ख मनुष्य होता है। बलवान के साथ लड़ना ठीक उसी तरह है जैसे चींटी के पर निकल जाएं। नीतिवान वही है जो कछुए के समान मुख सिकोड़कर शत्रु के प्रहार को सरलता पूर्वक सहे और अवसर मिलने पर विषधारी सर्प की तरह फन फैलाकर शत्रु पर टूट पड़े। जिस प्रकार नदी का भव तृण और पेड़ों को जड़ समेत उखाड़ने में समर्थ होता है। उसी तरह से उपाय की जानकारी रखने वाला छोटे–बड़े शत्रु के नाश में समर्थ होता है। इसीलिए मैं यही सलाह दूंगा कि उसके दूत को समझा–बुझाकर रोक लीजिए और इसी बीच हर प्रकार से अपनी किलेबन्दी मजबूत कर लीजिए। जिसके कारण शत्रु का प्रहार कामयाब न हो सके। किले की प्राचीर पर बैठा एक धनुर्धारी सैंकड़ो शत्रुओं को मार सकता है। युद्ध में सर्वप्रथम किलेबन्दी ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। जिस राजा को बिना किलेबन्दी से लड़ना पड़ता है उसकी हार निश्चित है। बिना किले के राजा जहाज से गिरे मनुष्य की तरह बेसहारा होकर डूब के मृत्यु को प्रस्थान हो जाता है। यह भी जान लीजिये कि किले के चारों तरफ खाई होनी चाहिए, किले से दीवारें भी ऊंची हों तथा किले के अन्दर युद्ध सामग्री की कमी नहीं होनी चाहिए। लम्बा–चौड़ा, ऊंचा–नीचा, जल, अन्न और ईधन का संग्रह, आने–जाने का मार्ग आदि किले की प्रमुख आवश्यकताएं हैं।" मन्त्री चकवे ने राजा को समझाया।

चकवे की बात सुनकर राजा बोला, "किलेबन्दी के लिए किसे नियुक्त करना चाहिए–जिससे कि हमें शत्रु के आने का पता चल सकें?" "जो जिस कार्य में चतुर हो उसे ही उस कार्य में लगाना चाहिए। अनुभवहीन विद्वान मूर्ख ही होता हैं, क्योंकि समय पर कार्य उचित ढंग से नहीं कर पाता है। इसलिए सारस को ही बुलाना चाहिए।" चकवा बोला।

सारस के आने पर राजा ने उसे आज्ञा दी, "सारस!तुम स्वयं ही जल्दी से किलेबन्दी कर दो।"

सारस ने सविनय कहा, "महाराज! किला तो हम सभी लोगों का देखा भाला है। यह सरोवर ही सर्वोत्तम है इसके मध्य में द्वीप के अन्दर समस्त आवश्यक सामग्री एकत्र कर लेनी चाहिए। मेरा तो यही निर्णय है कि धन से ज्यादा खाद्य सामग्री का संग्रह ही अति आवश्यक है, क्योंकि यदि मुख में अन्न की जगह धन रख दिया जाये तो भूख कदापि नहीं मिट सकती और रसों में सर्वोत्तम रस नमक है, इसका संग्रह भी खाद्य पदार्थो से अधिक आवश्यक है, क्योंकि नमक के बिना अन्न का बना हुआ भोजन सदैव स्वादहीन ही होता है।"

राजा सारस की बात सुनकर बोला, "शीघ्र जाकर सारी की सारी तैयारी जल्द से जल्द करो।

तभी कुछ क्षणों बाद द्वारपाल आकर बोला, "महाराज! सिंहल द्वीप

से आया हुआ मेघवर्ण नाम का एक कौआ अपने परिवारों के साथ बाहर द्वार पर विराजमान है। वह आपके दर्शन का अभिलाषी हैं।"

राजा बोला, "मेरे विचारपूर्वक तो कौआ बहुत समझदार होता हैं। वह तो ऊंच–नीच विचार कर ही कोई कार्य करता है। इसलिए उसे अपने ही कक्ष में कर लेना ही उचित है।"

"वह तो ठीक है, लेकिन कौआ भूमि पर सर्वत्र घूमने वाला पक्षी है और हमारे शत्रु पक्ष से मिला हुआ है। महाराज! जो अपने साथियों को छोड़कर शत्रु पक्ष से स्नेहःप्रेम रखता है वह नीलवर्ण गीदड़ की तरह बेमौत ही मृत्युलोक को प्राप्त हो जाता है।" चकवा बोला।

"यह नीलवर्ण गीदड़ कौन था?" राजा बोला।

चकवा बोला, "महाराज! मैं कहानी सुनाता हूं आप सुनें।"

❋❋❋

शेष पेज 6 **से आगे.....**

अप्राकृतिक घटनाए घटित होती है।

जिनका प्रभाव मनुष्य जीवन पर पड़ना स्वाभाविक होता है। सत्ता परिवर्तन, अर्न्तकलह, हडतसल, आगजनी, अस्त्र शस्त्र हथियारो का प्रकोप। दो देशो में आपसी कटुता अधिक बढ जाती है। भूस्खलन भूकम्प, वाढ़, से जल सकंट इत्यादि से जनता त्राहि–त्राहि करती है। देश के विशिष्ट व्यक्तियों के मान सम्मान को हानि व कई रहस्य उजागर होते है।

चौथा ग्रहण– 25 नबम्बर 2011 को खण्डग्रास सूर्यग्रहण मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष अमावस्या, शुक्रवार, वृश्चिक राशि अनुराधा नक्षत्र में दिन के 10 बजकर 14 मिनट से दोपहर 01 बजकर 27 मिनट तक रहेगा। सूतक गुरूवार रात्रि से आरम्भ हो जायेगें। यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा। इस ग्रहण को आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों में देखा जा सकेगा।

इस ग्रहण का प्रभाव वृश्चिक राशि व अनुराधा नक्षत्र में जन्में जातकों पर विशेष रूप से पड़ेगा। अतः ग्रहणकाल में उपाय करना हितकर रहेगा। **पाचँवा ग्रहण–** 10 दिस्मबर 2011 मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष पूर्णिमा शनिवार वृष राशि, रोहिणी व मृगशिरा नक्षत्र में रात्रि 06 बजकर 15 मिनट से रात्रि 09 बजकर 48 मिनट तक खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। ग्रहण के सूतक शनिवार दिन के 09 बजकर 15 मिनट से प्रारम्भ हो जाऐगें। भारत के अतिरिक्त इस चन्द्रग्रहण को आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैड़ जापान चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इरान, इराक, रूस, सऊदीअरब आदि देशो में देखा जा सकेगा। इस ग्रहण का प्रभाव वृष राशि, रोहिणी व मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे जातको पर विशेष रूप से रहेगा। अतः ग्रहणकाल में इष्ट आराधना, मंत्र जाप व दानादि अवश्य करें।

सवंत 2068 में पडने वाले सभी ग्रहणों में ग्रहण का अशुभ प्रभाव वृष, मिथुन, वृश्चिक, धनु राशि में जनमें जातक व रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठ, मूल भाद्रा, अनुराधा नक्षत्र में जन्में जातको पर अत्यधिक रहेगा।

अतः ग्रहण का दर्शन न करे व ग्रहण के स्पर्श होते ही स्नान करके जप पाठ आदि प्रारम्भ करें मध्य में हवन, देव पूजन करे। ग्रहण के अन्त में या पश्चात् दान करें। मोक्ष के बाद पुनः स्नान आदि करना चाहियें। ❋❋❋

शेष पेज 7 **से आगे.....**

चाँदी, डायमंड) एंव रत्नों का काम, पशुओं पर आधारित व्यापार, मिष्ठान भंडार, होटल, राजदूत, विदेश सेवा, रिसार्ट, शराब, वैभव–विलासिता की वस्तुओं का क्रय–विक्रय, स्त्री से सम्बन्धित कोई भी फैशन की वस्तुऐं आदि।

शनि होने पर नौकरी मजदूरी, वकालत, राजनेता, परिश्रम के कार्य, लोहे का व्यापार, काले अनाजों का व्यापार, तेल दवा, न्यायालय में लिपिक, इंजीनियर, जूते का व्यवसाय, पेट्रोल पम्प, ऑयल मिल आदि।

राहु व केतु होने पर केमीकल का व्यवसाय, जहर (Drug), शेयर, पोलीटिक्स, नेता, मंत्री, प्रधानमंत्री, जुआ–सट्टा, फिक्सिंग, विदेशी मुद्रायें, विदेश से क्रय–विक्रय आदि।

इसके अतिरिक्त किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए ग्रहों का बलवान होना अति आवश्यक है क्योकि यह आमतौर

पर देखा गया है कि अच्छी और उच्च शिक्षा के बाद भी लोग सालों नौकरी के लिए भटकते रहतें है, बहुत मेहनत के बाद भी व्यापार जम नही पाता, तो किसी को पढ़ते–पढ़ते ही नौकरी मिल जाती हैं। और कोई दिन–रात में ही व्यापार में सफल हो जाता हैं। सब समय की बात है ग्रहो का योग है, दशा–अन्तर्दशा तय करती है। कब–कहाँ–कैसे बनेगा आपका कैरियर। अगर एक बार सही राह मिल जाये तो आप अपनी मेहनत और लग्न से सफलता की बुलन्दियों को छू सकते हैं। ❋❋❋

शेष पेज 10 **से आगे.....**

हमारा जीवन और व्यक्तित्व ऐसा बने कि जहां कही भी जाएं सबके मन में सुगंध और प्रसन्नता लाऐं।

कुंकुम जो हल्दी और चूने या नीबू के रस में हल्दी को मिलाकर बनाया जाता है त्वचा का शोधन और मस्तिष्क स्नायुओं का संयोज करते है। हल्दी में खून को शुद्ध करने, शरीर की त्वचा में निखार लाने घाव को ठीक करने और अनेक बीमारियों दूर करने का उपाय होता है। इसीलिए यह एक महत्वपूर्ण औषधि भी है।

नैवेद्य प्रसाद के रुप में मिष्ठान फल को चढाएं जाते हैं इसका अर्थ यह है कि इससे हमें जो कुछ भी मिल रहा है उसे प्रभु की कृपा और प्रसाद मानें। भोग लगाकर जो प्रसाद वांटा जाता है उसमें भगवान का सूक्ष्ममांश आस्वादित होने के कारण उसका स्वाद अपूर्व व दिव्य हो जाता है इसकी अलग मात्रा के सेवन से ही अपूर्व रस मिलता है।

मिष्ठान का आशय यह भी है कि हमारी वाणी, व्यवहार, व्यक्तित्व सबमें मिठास, मधुरता आए क्योंकि इससे प्रभु प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार पूजा में भगवा की प्रिय वस्तुएं अर्पित की जाती है ताकि वे हमारे कार्यो को निर्विन्न पूरा करें।

आमतौर पर प्रसाद का तात्पर्य होता है जो बिना मांगे मिले क्योंकि प्रसाद बाँटने वाला स्वयं ही हाथ बढ़ाकर देता है इसीलिए भगवान के नाम पर बार जाने वाले वाला पदार्थ का नाम प्रसाद रखा गया है हम जानते हैं कि भगवान की कृपा को प्रसाद रुप में प्राप्त करने की ही भक्त अभिलाषा होता है इसीलिए वह प्रसाद के रुप में जो कुछ भी मिल जाता है। उसे सहज स्वीकार कर लेता है।

❋❋❋

शेष पेज 12 **से आगे.....**

पश्चात् फिर वह उसी अस्पताल में पहुँचा। कम्पाउंडर ने उसे पहचानाऔर वह उसे उसी सिविल सर्जन के पास ले गया।

डॉक्टर को बताया गया कि यह वही मनुष्य है जो पिछले वर्ष आया था। डॉक्टर देखकर आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछने लगा–'बताओं, तुम कैसे अच्छे हुए?' भिखारी ने उत्तर दिया–'गोमूत्र ने मेरी जान जान बचा ली।'

देहली के किशनगंज स्टेशन के गुड्स क्लर्क ने अपनी बीती बातें सुनायी। उनकी धर्मपत्नी की टाँग और पैरों में एग्जिमा रोग भयंकर रुप में था। एलोपैथिक, आयुर्वेदिक आदि अनेक प्रकार की चिकित्साएँ की गयीं। पर लाभ नहीं पहुँचा। अकस्मात् एक महात्मा का उनके पास आगमन हुआ। उन्होनें बताया कि बताया कि 'गोमूत्र से पैरों को प्रतिदिन भिगोते रहों, उससे यह रोग दूर हो जाएगा।' उन्होंने तीन मासतक वैसा ही किया और वह रोग दूर हो गया। उसके पश्चात् वह फिर कभी नहीं हुआ।

एक महात्मो ज्ञान–तन्तुओं के रोगों–अपीलत्सी, मिर्गी, हिस्टीरिया तथा पागलपन में गोमूत्र को बहुत ही उपयोगी माना है।

गोमूत्र में पुरुषों तथा गर्भवती स्त्रियों के गुप्त रोगों का निवारण करने की शक्ति विद्यमान है। खुजली, दाद, एग्जिमा तथा अन्य त्वचा–रोगों को गोमूत्र पीने से एवं गोबर तथा गोमूत्र का लेप करने से शीघ्र लाभ होता है, शरीर की गर्मी (ज्वर आदि) और भारीपन में गोमूत्र लाभप्रद हैं।

यदि किसी मनुष्य को क्षय हो तो उसे गौके उस बच्चे का मूत्र, जो केवल दूध पर ही रहता है देने से रोग दूर होता है। खूनी बवासीर में गोमूत्र का एनिमा बहुत लाभप्रद है। कुछ समय तक प्रतिदिन यह एनिमा लेते रहने से मस्से सर्वथा सिकुड़ जाते हैं।

गोमूत्र सौम्य और रेचक है। कब्ज, हो, पेट फूल गया हों, डकारें आती हों और जी मिचलता हो तो तीन तोला स्वच्छ और ताजा गोमूत्र छानकर आधा माशा सेंधा नमक मिलाकर पी जाना चाहिये। थोड़ी ही देर में टट्टी होकर पेट उत्तर जाता है और आराम मालूम होता है।

छोटे बच्चों का पेट फूलने पर उन्हें गोमूत्र पिलाया जाता है। उम्र के अनुसार साधारणतया एक वर्ष के बच्चे को एक चम्मच गोमूत्र नमक मिलाकर पिला देना चाहिये, तुरंत पेट उतर जाता है। बालकों के डब्बे का रोग, श्वास खाँसी तथा लीवर प्लीहादि के अनेकों रोग गोमूत्र के सेवन से जाते रहते हैं। (डब्बा रोग में बच्चे का पेट फूल जाता है, नाभि ऊपर आ जाती है और श्वास तीव्र गति से चलने लगती है।)

पेट के कृमियों को मिटाने के लिये तो गोमूत्र से बढ़कर दूसरी औषधि है। ही नहीं। चमुने (गुदा के कृमि) के निकले में गोमूत्र में कुछ चिकनाई मिला दी जाती है।

बच्चे को सूखा रोग हो जाय तो गोमूत्र में केसर मिलाकर कम–से–कम एक महीने तक पिलायें, यह औषधि दिन में दो बार दी जाय, आयु के अनुासर मात्रा एक ड्राम से चार ड्रामतक की हो।

पेट की व्याधि विशेषतः यकृत् और प्लीहा बढ़ रही हो तो पाँच तोला गोमूत्र में नमक मिलाकर प्रतिदिन पिलाया जाय, थोड़े ही दिनों में आराम हो जाता है।

यकृत् एंव प्लीहा रोग होने पर तथा पेट फूलने पर दर्द के स्थान पर गोमूत्र की सेंक भी की जाती है। एक अच्छी ईट को गरम करके उस पर चिथड़ा लपेट कर गोमत्र डालकर उसका सेंक तथा भाव दी जा सकती है।

शरीर में खाज अधिक आती हो तो गोमूत्र में नीम के पत्ते डालकर उसका लेप भी किया जा सकता है।

जीर्ण–ज्वर के रोगो को दिन में दो बार गोमूत्र पिलाते रहने से सात–आठ दिनों में बुखार जाता रहेगा।

आँखों में दाह, शरीर में सुस्ती हो और अरुचि हो तो गोमूत्र में गुड़ या शक्कर मिलाकर पीना चाहिये। आध पाव गोामूत्र कपड़े से छानकर पिलाने से दस्त हो जाता है।

शक्ति और उम्र के अनुसार नित्य सबेरे ताजा गोमूत्र 21 या 41 दिनोंतक पिलाने से कामला (पीलिया–जॉन्डिस्) रोग में निश्चय ही आराम हो जाता है।

आँख और फा की बीमारी में गोमूत्र डाला जाता है तथा उसकी सेंक और भाप भी दी जाती है। गोमूत्र में रहने वाला यूरिया कृमिनाशक कार्य करता है।

गोमूत्र शरीर के तन्तुओं के लिये हानिकारक नहीं है। घावों पर यह अविषाक्त पदार्थ के रुप में प्रयुक्त किया जाता है। इसके प्रयोग से दूसरे प्रकार की चिकित्सा में लगने वाले परिश्रम, खर्च और समय की बचत होती है।

इससे बीमारी के ठीक होने की प्रक्रिया में तनिक भी बाधा नहीं पहुँचती है। तात्कालिक चिकित्सा के रुप में इसका प्रयोग बहुत ही ही अपूर्व सिद्ध होगा। यह घाव में पुराने रक्त–संक्रामण से उत्पन्न होने वाले पीब को रोकता है।

गाय के मूत्र को गुन–गुना करके कान में डालने से कर्ण–शूल–कानका दर्द दूर होता है।

कान पकने पर गोामूत्र को बोतल में भर लें, निथर, जाने पर छानकर शीशी में अच्छा कार्क लगाकर, रख दें, रोगी का कान साफ कर 3–4 बूँद कान में टपका दें। बंगला कहावत है–

जे खाय गोरुरचोना, तार देह होय सोना।

अर्थात जो गोमूत्र पीता है, उसकी देह सोने की जैसी (नीरोग) हो जाती है।

गोमूत्र का आन्तरिक प्रयोग आमाशय तथा यकृत् पर बड़ा लाभ करता है, उसकी मात्रा पाँच तोलातक है। गोमूत्र मृदु, रेचक तथा मूत्रल है। ज्वर आदि में इसका प्रयोग घरेलू दवाकी तरह् किया जाता है। कुछ दिन का रखा हुआ गोमूत्र धातु के बरतनों को साफ करने में काम आता है।

कुछ दिन गोमूत्र के सेवन से धमनियाँ प्रसारित होती हैं, जिससे रक्त का दबाव स्वाभाविक होने लगता है। गोमूत्र से भूख बढ़ती है, शोध आदि कम होती है। यह पुराने वृक्कशोथ के लिये उत्तम ओषधि है। गोमूत्र–गोमय की जितनी प्रशंसा की जाय उती थोड़ी है।

❋ ❋ ❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृह्मजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262